भूमिका

आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य में 'नयी कहानी' विशेष रूप से चर्चा का विषय रही है । 'नयी कहानी आंदोलन' लगभग एक दशक तक प्रभावी रहा । 'नयी कहानी आंदोलन' का आरंभ कब हुआ या नयी कहानी का नामकरण या नयी कहानी आंदोलन है या नहीं ? यह विवाद का विषय हो सकता हैं किंतु यह निर्विवाद है कि नयी कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत के विविध मानसिक स्थितियों का चित्रण करती हैं। नयी कहानी ने नए सवाल उठाए। व्यक्ति, परिवार, समाज, स्त्री- पुरुष संबंध, नैतिकता आदि से जुड़े सवालों को आज़ादी के बाद के कहानीकारों ने बिल्कुल नए अंदाज से देखा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी समस्याओं के प्रति उसके सोचने का ढंग नया है। नयी कहानी ने हमारे सामने नए सवाल खड़े किए और नए ढंग से सवालों के जवाब दिए।

प्रसिद्ध कथाकार दूधनाथ सिंह ने एक संगोष्ठी के दौरान कहा कि "कहानी : नयी कहानी' के लेख नयी कहानी आंदोलन का दस्तावेज हैं'। तभी मेरे मन में प्रश्न उठा कि क्या वास्तव में 'कहानी : नयी कहानी' के लेखों का इतना महत्व है ? इसी प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास इस लघु- शोध के माध्यम से किया गया है।

कहानी आलोचना अपेक्षाकृत उपेक्षित रही है । यही कारण है कि कहानी की आलोचना के लिए कोई गंभीर परंपरा हिंदी में नहीं थी। हालाँकि यह नहीं कहा जा सकता है कि परंपरा थी नहीं, लेकिन जो थी वह साहित्य की अन्य विधाओं की आलोचना की तुलना में कमजोर थी । परंतु किसी भी साहित्यिक विधा या साहित्यिक आंदोलन को स्पष्ट करने के लिए आलोचना की भूमिका आवश्यक होती है । जिस तरह भक्ति आंदोलन, भारतेंदु युग, छायावाद, प्रगतिवाद और नयी कविता के आंदोलनों को स्थापित और व्याख्यायित करने में आलोचना ने जिम्मेदारी के साथ अपनी भूमिका निभाई

ठीक उसी प्रकार 'कहानी : नयी कहानी ' ने कहानी और कहानी समीक्षा सिद्धांत को स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

'नयी कहानी' को अपने समय का सर्वाधिक चर्चित और विवादास्पद कथा - आंदोलन माना गया और इस विवाद के केंद्र में नामवर सिंह द्वारा 'कहानी : नयी कहानी' में कहानी समीक्षा के नए प्रतिमानों की प्रस्तुति थी। नयी कहानी की आलोचना कहानीकारों तथा आलोचकों ने अपने- अपने ढंग से की। कोई नयी कहानी में यथार्थ के खोज की माँग करता है तो कोई प्रामाणिक अनुभूतियों की कलात्मक अभिव्यक्ति की। कोई नई - नई संभावनाओं की बात करता है तो कोई अँधेरे में चीख की। कोई व्यक्ति एवं सामाजिक जीवन के नए सत्य की माँग करता है तो कोई मानवीय वास्तविकता की संवेदना, संचेतना और भावबोध की। कोई उसे निष्ठा और आस्थाओं से मोहभंग बताता है तो कोई सामाजिक संबंधों का चित्रण। स्पष्ट है कि नयी कहानी की आलोचना में जितनी विविधता, विस्तार, जटिलता, गंभीरता, उलझन, और पारस्परिक विरोधभास है, उतना शायद ही किसी अन्य विधा की आलोचना में हो।

इस पारस्परिक विरोधभास के बावजूद कहानी - समीक्षा की विधिवत शुरुआत 'कहानी : नयी कहानी' से ही मानी जाती है। कहानी को वैचारिक आयाम प्रदान करने में इस पुस्तक का महत्व अविस्मरणीय है।

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध तीन अध्यायों में बाँटा गया है। पहला अध्याय **' नयी कहानी और कहानी संबंधी बहसों का आरंभ'** है जिसके अंतर्गत नयी कहानी और नयी कहानी से पूर्व की कहानी में मूलभूत अंतर स्पष्ट करते हुए पूर्ववर्ती कहानी आंदोलन पर चर्चा की गई है। इसके साथ नयी कहानी आंदोलन, नयी कहानी का आरंभ, नयी कहानी नामकरण विषयक विवाद आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है। नयी कहानी की

वैचारिक पृष्ठभूमि में स्वातंत्र्योत्तर परिवेश का भी विशेष महत्व रहा । 'नयी कहानी की वैचारिकता' के अंतर्गत नयी कहानी के निर्माण में किस प्रकार भारतीय तथा पाश्चात्य विचारधाराओं ने अपनी भूमिका निभाई इस पर विचार किया गया है।

दूसरा अध्याय **'कहानी की सैद्धांतिकी और 'कहानी : नयी कहानी''** है । इसके अंतर्गत नयी कहानी से पूर्व की कहानी - समीक्षा की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है । 'कहानी : नयी कहानी' में नामवर सिंह ने कहानी को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया । कहानी के आलोचना प्रतिमान निर्मित करने में 'कहानी : नयी कहानी' ने जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उस पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहानी - समीक्षा के आधारभूत तत्वों को सामने लाने का प्रयास किया गया है । वस्तु और शिल्प की नवीनता ने नयी कहानी को अपनी पूर्ववर्ती कहानी से अलग पहचान दी। इसका कारण नयी कहानी में वस्तु और शिल्प की नवीनता के साथ उनका अंतःसंबंध था।

तीसरा अध्याय **'नयी कहानी के अन्य आलोचक और 'कहानी : नयी कहानी''** है । इस अध्याय में नयी कहानी के प्रमुख रचनाकार आलोचकों (राजेंद्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर) की कहानी- समीक्षा दृष्टि पर प्रकाश डाला गया है। 'कहानी : नयी कहानी' में कहानी - समीक्षा के जो मानदंड निर्मित किए वह वाद -विवाद का कारण बना । इस वाद -विवाद में नयी कहानी के रचनाकार आलोचकों और नयी कहानी के आलोचकों सभी ने बढ़ - चढ़कर हिस्सा लिया । भले ही ये आलोचक 'कहानी : नयी कहानी' में नामवर सिंह की स्थापनाओं से असहमत हुए, परंतु 'कहानी : नयी कहानी' में जिन मुद्दों को उठाया गया, जिन प्रश्नों से पाठकों को टकराने के लिए मजबूर किया गया उससे कहानी - समीक्षा शत प्रतिशत लाभान्वित हुई।

किसी भी सार्थक कार्य को निष्कर्ष तक पहुँचाने में अनेक व्यक्तियों का योगदान होता है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हमारी मदद करते रहते हैं। सर्वप्रथम अपने **माता - पिता** और **गुरुजनों** के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, क्योंकि उनके स्नेह और आशीर्वाद के बिना जीवन का कोई भी कार्य संभव नहीं है।

शोध निर्देशक **डॉ. प्रीति सागर** का मैं सदा आभारी रहूँगा, जिन्होंने कार्य की पूर्णता के लिए सदैव प्रेरित किया और सदा बहुमूल्य सुझाव और निर्देशन प्रदान किया है। उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। तत्पश्चात् मैं साहित्य विभाग के अध्यक्ष **प्रो. कृष्ण कुमार सिंह** का सहृदय आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने इस विषय पर कार्य करने की अनुमति प्रदान की।

अंत में अपने प्रिय **रवि**, **शशि** और **चारु** को स्नेह, जिन्होंने इस शोध कार्य में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। जीवन में ऐसे लोग हों तो कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण किया जा सकता है।

मणि कुमार